

आसो सुष्ट ९, गुरुवार ता. १५-१०-१९६४
श्री तारुणस्वामी द्वारा रचित श्रावकाचार, गाथा-११५,
१३२, १३३, १३४, १४२, १६८, १६९, प्रपयन-१९

... श्रावकाचारका वर्णन क्या है? श्रावकको मद्य.. मद्य शराब नहीं होना चाहिये. शराब. दाइको शराब कहते हैं न? शराबका पीना. यहां तो अध्यात्ममें शराब उतारा है. बनारसीदासमें सब आता है. देओ! ११५ गाथा.

जिन उक्तं न श्रद्धते, मिथ्या रागादि भावनं।

अनृतं नृत जानाति, ममत्वं मान भूतयं॥११५॥

है ११५? जिनेन्द्रके कहे लुअे उपदेशका श्रद्धान नहीं करता. पहला शब्द ये है. जिनेन्द्र 'उक्तं'. सर्वज्ञ वीतराग अेक समयमें जिसको वीतरागता और विज्ञानघनता, तीन काल, तीन लोकका ज्ञान जिसको हुआ है, अैसा वीतराग है. और उसको केवलज्ञान-तीन काल तीन लोक जानते हैं अैसा ज्ञान भी है. अैसा आस्थापूर्वक कहते हैं. 'जिन उक्तं'. परमेश्वर वीतरागदेवने 'उक्तं' नाम कहा. छल द्रव्य, पंचास्तिकाय, नौ तत्त्व, 'उक्तं न श्रद्धते'. अैसे आत्माको छल द्रव्यको नहीं मानते हैं.

'मिथ्या रागादि भावनं'. बूढे रागकी भावना द्वारा. मिथ्या राग-द्वेषकी भावना सदा किया करते हैं. विपरीत पर्याय, राग-द्वेष-मोहकी पर्यायमें लीन होते हैं. और अपना स्वभाव शुद्ध चैतन्य, सर्वज्ञने जैसा कहा, अैसा नहीं मानते हैं, वह मट्टिरा पीनेवाला जैसा कहनेमें आया है. कलौ, ऽलच्यंदृष्ट!

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- पागलपनेमें पागल हुआ है.

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- वीतरागकी परीक्षा करना, वह तो सब कहते हैं. ईसलिये पहला शब्द लिया है. 'जिन उक्तं' शब्द लिया है. अपने घरकी बात नहीं करते हैं. 'जिन उक्तं' है न? पंडितृष्ट! जिन कौन है, अजैन कौन है, अन्य क्या कहते हैं, जैन क्या कहते हैं, उसका टोका टोटल करके, तुलना करके ही निर्णय करना चाहिये. समजमें आया? सेठी! यहां तो सब .. कहते हैं, हमारे भगवानने कहते हैं वह सत्य, हमारे भगवानने कहा वह सत्य. नहीं करना चाहिये? जिन कौन है, जिनने कैसा.. वह पहले कहा, जिसको वीतरागता पूर्ण हो गयी है और जिसको केवलज्ञानघन अेक समयमें तीन काल तीन लोकको जाननेकी पर्याय प्रगट हो गयी है, अैसे परमेश्वरको अरिहंत कहनेमें आया है. यहां 'उक्तं' शब्दप्रयोग किया

है इसलिये सिद्ध नहीं है. जिसको सर्वज्ञपद और वीतरागपद प्राप्त हुआ, उन्होंने कहा हुआ. ऐसा शब्द है न. 'उक्त'. तो सिद्ध तो कह सकते नहीं. समझमें आया? सिद्धको तो भाषा है नहीं.

वह कहा कि, 'जिन उक्त'. अर्थात् अरिहंतपदमें जो वाणी निकली है, पूर्णानंद प्राप्त और वीतराग होनेपर भी वाणी आती है. धतना भी सिद्ध किया. पूर्ण हो और उसके बाद वाणी होती ही नहीं, ऐसी बात है नहीं. और वाणी, वाणीके कारणसे निकलती है. उसको व्यवहारसे 'जिन उक्त' वीतरागने कहा हुआ, ऐसा कहनेमें आया है. कहां, समझमें आया? डाक्यंदृष्ट! वीतराग तो कहे कि हमारा पूर्ण मार्ग है, दूसरा कहता है कि हमारेमें पूर्ण है. तो तुलना करनी चाहिये कि नहीं? परीक्षा करनी चाहिये. 'जिन उक्त'. सर्वज्ञ परमात्मा आत्माका स्वभाव.. आगे अभी कहेंगे, पूर्ण सर्वज्ञस्वभाव ही आत्माका है. कल आया था. सर्वज्ञ आत्माका त्रिकाव स्वभाव है. उसका जिसको भान होकर अनुभव होकर केवलज्ञान प्रगट हुआ और वह वाणी जो निकली उसको 'जिन उक्त' कहनेमें आता है. तो उसका अर्थ-जिनागम. वीतरागने कही वाणीको जिनागम कहनेमें आता है. जिनागमके सिवाय सत्य बात तीन कालमें दूसरेमें कहीं नहीं है. पहले तो जैनको ही नहीं माने. समझमें आया? उसकी मान्यता तो भिन्नकूल विपरीत, अज्ञानी पागल है. पागल है, पागल. पागल कहते हैं न?

'मिथ्या रागादि भावनं'. देजो! सूक्ष्म बात की है. अपना स्वभाव सर्वज्ञने कहा ऐसा नहीं मानकर, मिथ्या श्रद्धामें अल्प सदा अल्पज्ञ हूं, मैं परमेश्वरका भक्त ही रहनेके लायक हूं, परमेश्वर कोई दूसरा कर्ता है उसका मैं सदा दास रहूंगा. भोक्तृमें भी भगवानका भक्त ही बना रहता है. ऐसी जिसकी भावना है, वह मिथ्याश्रद्धा और मिथ्या रागकी भावना करता है. समझमें आया? टाईमसर आना चाहिये.

'अनृतं नृत जानाति'. .. सच मानते हैं. देजो! है न? 'अनृतं' नाम जूठ कल्पितको 'नृत' यानी सच्चा. जूठाको सच्चा माने और सच्चेको जूठा माने. तो जूठा-सच्चा क्या है उसकी उसने परीक्षा करनी चाहिये. कल आया था न? 'परिच्छये'. परीक्षा किये बिना माने कि हमारा मार्ग ठीक कहता है, भगवान ठीक कहते हैं, ऐसा नहीं. समाजमें जन्म हुआ फिर भी क्या कहते हैं और उसका सत्य क्या है, ऐसी परीक्षा बिना माने तो जूठ है, कल्पित है, उसे सच्चा ज्ञान लेता है. कहां, समझमें आया?

श्रावक उसको कहते हैं कि जिसको, 'जिन उक्त'-वीतराग परमात्माने कही वाणी-आगम, उस आगममें कहे पदार्थ-छह द्रव्य, नौ तत्त्व, पंचास्तिकाय अनादिअनंत पदार्थ है, ऐसा जो श्रद्धामें लेता है और आत्मा ज्ञायक स्वरूप अजंजानंद पूर्ण है, ऐसा श्रद्धामें लेता है, उसे श्रावकका आचार कहनेमें आता है. यहां अनाचारकी बात की है. श्रावक मद्य नहीं

पीता. मध-दाइ. दाइका अर्थ-अज्ञानीका कहा हुआ माने तो दाइ पीया है.

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- मूढ है उसने भी दाइ पीया है. ज्ञानीका नहीं माने और अज्ञानीका भी नहीं माने तो वह तो मूढ हुआ. किसीका नहीं मानना, (वह तो) स्वच्छन्द हुआ. समझमें आया?

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- .. मानता है.

बूढ-‘अनृत’को सख्या ज्ञान लेता है. ममता और अभिमानका भूत उसपर चडा रहता है. भूत लगा है, सरपर भत (चडा है). हम समझे वह बराबर है, हमने समझा वह बराबर है. भगवान क्या करते हैं, भगवानकी वाणी क्या कहती है, उसकी साथ तो मिलान करता नहीं. उसको यहां ममताका, मानका भूत (सर) पर सवार हो गया है, वह दाइ पीनेवाले जैसा पागल है. परीक्षा करनी चाहिये. श्रावक-श्रावक जैसे नहीं होता, जैनमें आ गया तो. समाज भूषण नाम दे दिया है तुमको.

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- सर पर बडी जिम्मेदारी आयी है. समझमें आया? देओ!

तारणस्वामी ११पर्वी गाथामें शराब पीनेवाला जैसे मधमें पागल हो जाता है, ऐसा जिनोक्त कहे प्रमाणसे विद्ब्र मानता है, अन्यका कल्पित पदार्थ अज्ञानीओंने (कहा हुआ कि) अक आत्मा ही है, जड ही है, अथवा सब द्रव्य अक होकर रहते हैं, ऐसा कल्पित तत्त्व है, उसको माने तो पागल जैसा, दाइ पीनेवाले जैसा उसको माननेवाला करते हैं. कलो, समझमें आया? ११प लुई. ११प लुई न? १३२. थोडी भास-भास गाथा देभकर विभ लिया है. १३२. योरी. योरी-योरी किसको करते हैं? पंडितज! योरी किसको करते हैं?

स्तेय दुष्ट प्रोक्तं च, जिन वचन विलोपितं।

अर्थ अनर्थ उत्पाद्यते, अस्तेय व्रत खंडनं॥१३२॥

दुःभकारी, अहितकारी वयनोंका कलना. ‘दुष्ट प्रोक्तं’ है न? ‘दुष्ट प्रोक्तं’. वास्तविक तत्त्वसे ठीकठा कथन करना. भगवानका कथन जो है, परमात्माने कहा, गणधरदेवने आगममें रखा, उससे विद्ब्र कोई कहता है, वह दुष्ट, दुःभकारी वयनोंका कलनेवाला सत्यकी चोरी है. चोर है. त्यागी होकर भी यथार्थ वीतरागमार्गसे विद्ब्र कल्पित अज्ञानीका कथन माने और कहे, वह चोर है. .. कितनी जवाबदारी है! जैसे जैनमार्गमें कोऽपति हो या अबजोपति हो तो उसके मुनिमको दस रुपयेका पगार दे मुनिमपना करे ऐसा हो सकता है? दस रुपयेका पगार दे वह कितना काम कर सके? उसका मुनिम बडा होना चाहिये.

जैसे सर्वज्ञ परमात्मा जिनागमकी श्रद्धा-ज्ञान कलनेवाला महान ज्ञानी, श्रद्धावंत, वास्तविक

विवेक, भान है, सर्वज्ञका मार्ग है, अज्ञानीका यह है, सबका विवेक हो, वह उसका कथन कर सकता है. दूसरेमें विरोध आये बिना रहता नहीं. कहीं भी अकेले भी विरोध घूस जाये तो पूरे शासनका लोप हो जाये. देओ! यह कहते हैं.

‘स्तेय दुष्ट प्रोक्तं च, जिन वचन विलोपितं’ देओ! प्रत्येक गाथामें रभा है, जिनवचन, जिनवचन. वीतराग सर्वज्ञ परमात्मा त्रिलोकनाथ जैन परमेश्वर, उन्होंने अकेले आत्माको अनंत गुणका राशि कहा. जैसे अनंत आत्मा, उससे अनंतगुना परमाणु, ऐसी बात जो कही, उसमें अकेले आत्मा अपना पूर्ण ज्ञायकभाव अनंत गुणकी राशि, उसकी प्रतीति किये बिना, ‘जिन वचन विलोपितं’ वीतरागका वचन लोप करता है, नाश करता है. ‘अर्थ अनर्थ उत्पाद्यते’. अर्थका अनर्थ उत्पन्न करता है. देओ! शास्त्रमें क्या कहना है? भगवानको क्या कहना है? अर्थका अनर्थ करता है.

यशोविजयने लिया है न? श्वेतांबरमें (हुआ). उसने कहा है, ‘जाति अंधनो दोष नहीं आकरो,’ जाति अंध समजते हो? अंधा. जन्मसे अंधा. वह यहां कहते हैं, देओ! ‘जाति अंधनो दोष नहीं आकरो, जो जाणो नहि अर्थ’. जन्मअंध क्या जाने बेचारा, क्या शब्द है, क्या है? ‘जाति अंधनो दोष नहीं आकरो’ गुजराती है. ‘जो जाणो नहि अर्थ, मिथ्यादृष्टि तेथी आकरो, करे अर्थनो अनर्थ...’ है शब्द? अर्थ, अनर्थ. है? शब्द है कि नहीं? मिथ्यादृष्टि अंधा अज्ञानी, वास्तविक वीतरागमार्गकी पहचान बिना, परका कथन और वीतरागके कथनको मिश्रण करता है, उसको मालूम नहीं है कि मैं क्या जिनवचन लोपता है, उसको यहां चोर कहनेमें आया है. वीतरागका वह चोर है. सर्वज्ञ परमात्माके कथनमें आया, उससे विद्ध कहनेवालेको यहां चोर कहनेमें आया है. पंडित हो और त्यागी हो और मुनि हो, लेकिन यह वीतरागमार्गसे विद्ध माने तो वह चोर है. आलाला..!

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- विपरीत ही करे. इसलिये यहां कहते हैं.

‘जिन वचन विलोपितं। अर्थ अनर्थ उत्पाद्यते’ अर्थका अनर्थ उत्पन्न करता है. क्या भाव है शास्त्रमें, द्रव्य-गुण-पर्याय कैसी चीज है, कैसी परिपूर्णाता है, कैसी अपूर्णाता है, कैसा विकार है, कैसा द्रव्य स्वभाव है, कैसा लोकालोक स्वभाव है, वह मालूम नहीं. अपनी कल्पनासे शास्त्रका अर्थका अनर्थ ‘उत्पाद्यते’ (उत्पन्न करता है). है भैया? उसमें अर्थ नहीं है. उसका अर्थ है, देओ! अर्थका अनर्थ करना भी, ‘उत्पाद्यते’ नाम करना, करना भी चोरी है. अर्थका अनर्थ करना वह भी चोरी है. पंडितजो! ...में बैठना और पोकल यवे ऐसा नहीं यलेगा. वैसे सर्वज्ञ भगवानकी दुकान पर बैठकर उसका मार्ग क्या है यह समझमें आये नहीं (और) कहे कि ऐसा है, वैसा है, ऐसा है. समझमें आया? रागादि, पुण्य आदिसे धर्म मनावे, देहकी क्रिया आत्मा कर सकता है ऐसा मनावे, ऐसा माननेवाला

भगवानके अर्थका अनर्थ करता है. चोर है. चौरासीकी गतिमें चोरी करके चला जायेगा.

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- .. नहीं होता. अंतर दृष्टिमें ज्ञायकका आचरण करके, यहां व्यवहारकी बात नहीं की है. व्यवहार है ऐसा पहले कहा, ... की बात है. हो. शुभराग आता है ऐसा. समझमें आया? उमरका त्याग.. क्या करते हैं? इव. ... ऐसा विकल्प होता है. और यहां क्या कहा? जलगावन आदि किया (होती है). किया कियेके कारणसे होती है. ऐसा मैं कर सकता हूं, पानी छाननेकी किया मैं कर सकता हूं, वह जिनआज्ञाको विलोप करनेवाला है. वह तो परकी किया है. कर सकता नहीं, करे क्या? विकल्प ऐसा आता है. समझमें आया? समझना पड़ेगा, हां!

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- चोरी, आत्माका स्वभाव वीतराग भगवान जो करते हैं उससे विद्वांस मानते हैं वह चोर है. चोरी क्या, दूसरेकी चीज लेना (चोरी है)? अपने स्वभावमें नहीं है, ऐसा विद्वांस करनेवाला परको अपना मानता है, वह चोर है. अपना बनाया, माना, जाना. वह किया मैं कर सकता हूं, ... इलानी-ढीकनी ... आती है न सब? सबकी किया है. आत्मा कर सकता नहीं. विकल्प आता है, बस! उतनी मर्यादा है. विकल्प आता है, वह भी धर्म नहीं. पंडितजी!

मुमुक्षु :- कठिन पडता है.

उत्तर :- कठिन क्यों पडे? ...

आत्मा है, ... भगवान समझने (वालेको) समझते हैं कि नहीं? कि नहीं समझ सकता है उसे समझते हैं? तुम नहीं समझ सकोगे, ऐसा करते हैं? क्या करते हैं यहां? तारुणस्वामी क्या करते हैं? आप समझ सकते हो, ऐसा समझो.

जो कोई अर्थका अनर्थ करते हैं, 'अस्तेय व्रत खंडनं'. सम्यग्दर्शन सहित व्रत कोई व्रत लिया हो और बादमें व्रतमें खंडन कर दे वह भी चोर है. कल, समझमें आया? ... करे, शास्त्रमें कुछ कहा हो (और) अपनी स्वछंद कल्पनासे परंपरा मार्ग दूसरा चलाये, मार्गका विरोध हो जाये तो करते हैं, वह सब ठग अनंत गणधरो, अनंत तीर्थकरो, जिनवाणीका चोर है. सत्यको समझता नहीं. बड़ी जिम्मेदारी है. ये धर्म मार्ग है. पोपाबाईका राज नहीं है. करते हैं? उसमें बहुत अर्थ लिया है. देओ! अब आया.

सर्वज्ञ मुख वाणी च, शुद्ध तत्त्वं समाचरंतु।

जिन उक्तं लोपनं कृत्वा, स्तेयं दुर्गतिं भाजनं॥१३३॥

ये चोरी. सर्वज्ञ वीतराग अरिहंत भगवानके मुञ्जारविंदसे प्रगट वाणी. देओ! कोई कल्पना अज्ञानीकी नहीं. त्रिलोकनाथ सर्वज्ञ परमात्मा अक समयमें त्रिकाल ज्ञान है, ऐसा सर्वज्ञ

मुझ शब्द लिया है, देओ! अरिहंत लेना है न? यहां अरिहंत लेना है. सिद्ध तो पूर्ण हो गये, उनको कहां वाणी है. सर्वज्ञके मुझमेंसे वाणी आयी. ओहो..! सर्वज्ञ हुआ तो भी वाणी है. ऐसा संयोग संबंध है. सर्वज्ञ पूर्णानंद हो गया, फिर वाणी कहां है. वे तो समा गये. ऐसा नहीं है. सुन तो सही. समा गये. फिर भी सर्वज्ञ वीतराग भगवानके मुझारविंद. मुझारविंद-मुझ रूपी कमल. उससे जो वाणी निकली, उस वाणीके अनुसार... है न? शुद्ध तत्त्व, शुद्ध आत्मिक तत्त्वका अनुभव करो. 'समाचरंतु' यानी अनुभव करो. अनंत पदार्थ सिद्ध करके, छल द्रव्य प्रतीत करके, मेरा आत्मा... देओ! ये श्रावकाचार. ज्ञायक पूर्णानंद, ज्ञानसे ज्ञानका आचरण करो. ज्ञानसे ज्ञानका आचरण करो. ज्ञानसे ज्ञानका आचरण करके केवलज्ञान होता है. ज्ञानमें रागका आचरण और क्रियाका आचरणसे केवलज्ञान होता नहीं. बीचमें आता है व्यवहार विकल्प, लेकिन उस आचरणसे केवलज्ञान (नहीं होता). वह राग, विकल्प मुक्तिका मार्ग है ऐसा वीतराग मार्गमें है नहीं. और माने कि रागसे भी मुक्ति होती है, रागकी परंपरासे मोक्ष कलते हैं, कोई रागसे मोक्ष नहीं कलते. उसमें सच्चा क्या? समझमें आया? व्यवहार करते, करते, करते, दया, दान, भक्ति, ... पालते-पालते मोक्षमार्ग हो जायेगा. .. पड़ेगा. ऐसे नहीं होगा. रागसे नहीं. दृष्टिमें पहले छोड़ना पड़ेगा.

दृष्टिमें राग लेय मानकर, स्वभाव ज्ञायक चिदानंदको उपादेय मानकर, जो भगवानने कला, 'शुद्ध तत्त्वं समाचरंतु'. देओ! वाणीका सार कला. पहले तो 'जिन उक्तं' सत्य माना. लेकिन सार क्या है? 'शुद्ध तत्त्वं समाचरंतु'. अकेला शुद्ध भगवान ज्ञानमूर्ति प्रभु, उसमें 'शुद्ध तत्त्वं' स्वभाव त्रिकावी. 'समाचरंतु' वह पर्याय आयी. द्रव्य त्रिकाव ज्ञायक अण्ड अंक अलंकार वस्तु. अंक ... समाचरण. उसमें आचरण करना. सम आचरण. उसमें स्थिर होना. श्रद्धा, ज्ञान और लीनता निर्विकारी वीतरागी पर्याय, ये तीनों वीतरागी पर्याय है. वीतरागी पर्याय 'समाचरंतु' ये वीतरागका मार्ग है, ये श्रावकाचार है. डालचंदण्ड! मूल मार्ग तो इस तत्त्वको समझे बिना, लाज बाह्य क्रिया करे, दान, भक्ति, पूजा, मंदिर, वाणीकी पूजा सब राग, राग और राग-विकल्प है. उसमें कुछ धर्म है नहीं. समझमें आया?

शुद्ध तत्त्वका अनुभव करो. भगवानकी वाणीमें तो ये है. 'लाज बातकी बात निश्चय उर आणो.' आता है कि नहीं? छल ढालमें आता है. प्रेमचंदण्ड! आता है न? लाज बातकी बात-सर्वज्ञ भगवान त्रिलोकनाथकी वाणीमें ऐसी दिव्यध्वनि आयी, सौ ईन्द्रके बीचमें समवसरणमें वाणी आयी, उस वाणीमें यह आया-शुद्ध तत्त्वका (आचरण करो). अहो..! तेरा पूर्णानंद अरागी वीतरागी समस्वरूपी चैतन्य, उसका अंतर आचरण करो. उसमें श्रद्धा-सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र तीनों आचरण अंतर निर्विकल्प (करो). उसका नाम भगवान श्रावकाचार (कलते हैं). देओ! लोग तो चिह्नाते हैं.

रातको अेक विचार अैसा आया था, भाई! प्रवचनसारमें आता है न? श्रावकको निश्चयका अवकाश नहीं है. वल तो अपेक्षासे बात की है. आता है न? वल तो यारित्र-स्थिरताकी अपेक्षासे बात है. यहां तो श्रावकको ये करणी, ये करणी और ये करणी, अैसा ही कलते हैं. समजमें आया? पंचम गुणस्थान और यौथे गुणस्थानमें. आता है न? भाई! श्रावकको निश्चयका अवकाश नहीं है. शुद्धउपयोगकी लीनता बारंबार आवे अैसा आचरण नहीं है. लेकिन ये वस्तु तो.. वल तो मुनिके लायक ञे आचरण है, वल श्रावकको नहीं हो सकता. पूर्ण शुद्धउपयोगनी लीनता, लीनता, लीनता.

सर्वज्ञ मुजवाणीमें ये आया है. सब शास्त्रका सार और तात्पर्य ये आया है, अैसा कलते हैं. शुद्ध तत्त्व समाचरण. भगवानकी वाणीमें... आलाला..! कुंडकुंदाचार्य भी पांचवी गाथामें कलते हैं, अलो..! हमारे गुरुने हम पर कृपा करके शुद्ध आत्मतत्त्वका उपदेश दिया. अस, ये शब्द है. पांचवी गाथामें आया है, समयसार. हमारे गुरुने हमको शुद्ध आत्मा.. उसमें बहुत आ गया. पर्यायमें अशुद्धता है, निमित्त, अशुद्धता है, .. है, अशुद्धता अनादिकी .. तो शुद्धता प्रगट करनेकी होती नहीं. हमारा आत्मा शुद्ध है तो पर्यायमें शुद्धता प्रगट करो. प्रगट पर्यायमें होता है, शक्तिरूप कायम रहेता है, अैसा हमारे गुरुने हमको उपदेश दिया. इसलिये हमारा निज वैभव हमको प्रगट हुआ है. समजमें आया?

यहां कलते है, शुद्ध तत्त्व अनुभवो. समाचरंतुका अर्थ सम्यक् आचरंतु. सम्यक्-सम आचरंतु. सम्यक्, अैसा आत्माका स्वभाव है उसकी श्रद्धा-ज्ञान. अैसे प्रकारकी श्रद्धा-ज्ञानका आचरंतु, वल श्रावकका आचार भगवानकी वाणीमें आया है. कोई कहे कि, इसमें तो व्यवहारका लोप हो जाता है. सुन तो सही. व्यवहार भीयमें आता है. निश्चयके आचरणके भीयमें पूर्ण निश्चय जबतक नहीं हो तबतक भीयमें देव-गुरु-शास्त्रकी भक्ति, विनय.. ये सग्ये देव-गुरु, हां! उसका विनय, बहुमानका विकल्प आता है. पंचम गुणस्थान योय्य बारल व्रतका विकल्प आता है. लेकिन वल राग है. निश्चय मार्गमें व्यवहार आता है, लेकिन व्यवहार भोक्षका कारण है, अैसा वीतरागकी वाणीमें आया नहीं. समजमें आया?

'जिन उक्तं लोपनं कृत्वा'. अैसी वीतरागकी ञे वाणी,... पहले 'सर्वज्ञ मुख' कहा, यहां 'जिन उक्तं' कहा. अैसा वीतराग परमेश्वरने आत्मा शुद्ध स्वभाव अंदर है, पर्यायमें अशुद्ध है. वल दृष्टि छोडकर शुद्धका अनुभव करो, दृष्टि करो, अैसी ञे वाणी है तो ... निमित्त है. छल द्रव्य है, सब है. अैसा 'जिन उक्तं लोपनं कृत्वा' उसका लोप करके 'स्तेयं दुर्गति भाजनं'. दुर्गतिका पात्र है. नरक ने निगोदमें जायेगा, अैसा कलते हैं. समजमें आया? है न? भैया! 'स्तेयं दुर्गति भाजनं' वल दुर्गतिको .. वाला है, दुर्गतिमें जानेवाला है. समजमें आया? १३३ दुई. ...

दर्शन ज्ञान चारित्रं, अमूर्तं ज्ञान संजुतं।

शुद्धात्मानं तच्च लोपंति, स्तेयं दुर्गति भाजनं॥१३४॥

समझमें आया? आला..! जो कोई आत्मा सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्रमय अमूर्तिक ज्ञानमय. भगवान अमूर्तिक आत्मा. जिसमें वर्ण, गंध, रस, स्पर्श कुछ है नहीं. है क्या? सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्रसे भरा पडा ऐसा अमूर्तिक ज्ञानमय शुद्ध आत्माको... 'शुद्धात्मानं तच्च लोपंति' 'लोपंति' का अर्थ जानते नहीं, समझते नहीं और उसके शुद्ध स्वरूपका अनादर करते हैं, वह शुद्धका लोप करते हैं, -'लोपंति'. समझमें आया? परंतु उसके सिवाय किसी धर्मको पावते हैं. जैसे आत्माको छोडकर, ऐसा परमात्माने कदा है जैसे आत्माकी दृष्टि, ज्ञान, आचरण छोडकर दूसरे भावमें लग जाते हैं और उससे मेरा कल्याण होगा, वह मेरा श्रावकाचार है, ऐसा माननेवाला दुर्गति भाजन है. भाषा कठिन पडती है. ... कडक भाषा है. सत्य है. दुर्गति जायेगा.

वीतराग सर्वज्ञ त्रिलोकनाथ परमेश्वर, सौ ईन्द्रसे पूजनिक प्रभु, उनकी वाणीमें क्या आया? और वे क्या कहते हैं उसे समझे बिना, तेरे घरकी कल्पनासे तू श्रावकाचार चलाता है और मानता है कि मैं श्रावक हो गया, दुर्गति भाजनं. दुर्गतिमें पटक जायेगा. चार गतिमें दुर्गति भरी दुर्गति निगोद है. समझमें आया? कोई ठिकाने ये पद्य है न, पद्य, कोई बार ऐसा .. किया, कोई बार नर्कमें जायेगा, कोई बार निगोदमें जायेगा, ... समझमें आया?

'शुद्धात्मानं तच्च लोपंति', देओ! शुद्धात्म तत्त्वका लोप करते हैं, जैसे धर्मको पावते नहीं और उल्टे धर्मको आत्माका धर्म कहते हैं, वे चोरीके भागी हैं. अपना स्वभाव तो लूटाया. विपरीत श्रद्धामें अपने स्वभावको लूटाया. वह चोर हुआ. अपनी संपदा लूट गयी. किसकी चोरी करनी है? माल गया वह चोरी हो गयी. विकारका लाभ हुआ. अनंत कालसे अर्थका अनर्थ करके आगेपीछे करके कहता है, शास्त्रको भगवानके अर्थको, और अपने शुद्धात्माका लोप करता है, (वह) 'स्तेयं दुर्गति भाजनं'. वह दुर्गतिमें जानेवाला भाजन है. कहे, समझमें आया? १४२. वह आ गया है. .. हो गया न? १४२. पंडितजी! कैसे अर्थ करना और कैसे समझना, वह चीज बहुत बड़ी है.

विषयं रंजित येन, अनृतचानं संजुतं।

पुण्य उत्साहे उत्पाद्यते, दोष आनंदनं कृतं॥१४२॥

... 'दोष आनंदनं कृत' ये बराबर है. 'दोष आनंदनं कृत' है, अंदरमें है. यहां छपनेमें भूल हो गयी है. शब्दार्थमें है. ... क्या कहते हैं?

जो 'विषयं रंजित' पांच ईन्द्रियोंके विषयोंमें रागमें रंजित होता है. उसका अर्थ-अरागी भगवान अपने आत्माके आनंदकी रुचि छोडकर, आनंदका उत्साह नहीं है वहां रागका उत्साह

पडा ही है. आलाला..! समझमें आया? हो जाता है, वह मृषानंद रौद्रध्यान सहित.. देओ! यहां रौद्रध्यानकी व्याख्या चलती है. मृषानंद-बूढा आनंद. रौद्रध्यान सहित होता है. मिथ्यात्वमें आनंदवान जो जाता है. मिथ्याश्रद्धा पापका परिणाम, उसमें लीन होता है, वही वास्तवमें रौद्रध्यान है. ये रौद्रध्यानकी व्याख्या. समझमें आया?

पुण्य उत्साह 'उत्पाद्यते' पुण्य करनेमें उत्साह पैदा कर लेता है. ये शब्द बडा है. जिसको अपना ज्ञाता-दृष्टा अभंडानंदका उत्साह, रुचि, दृष्टि नहीं, और पुण्य विकल्प-शुभभाव आया, उस शुभमें सर्वस्व उत्साह कर दिया, रौद्रध्यानी है. भराब ध्यान करनेवाला है. सेठ! .. लेकिन तुमने दरकार की नहीं अभी तक. ओलंबा देना पडे कि नहीं सेठको. कुछ मालूम नहीं. क्या चीज है, स्व क्या है, पर क्या है. ... अग्रेसरोंने जैसा चलाया और त्यागी नाम धरनेवालोंने प्रोत्साहन दिया. पढा-लिखा है, लेकिन वह पढा-लिखा अपनी कल्पनासे अर्थ करके दृनियाको चढाया. क्यों? पंडितज! आपके सर बहुत जिम्मेदारी है. समाजके अग्रेसर है. ... जैसा है, वैसा है, सबकी जिम्मेदारी है. सेठ!

'पुण्य उत्साहे उत्पाद्यते, दोष आनंदनं कृत'. उसका रौद्रध्यान है. आलाला..! मगनभाई! पुण्य उत्साह ली, जिसको पुण्य परिणाममें उत्साह लगा है, सावधानी उसमें लगी है, वह दोष है, अंधन है, शुभभाव विकार है. उसमें आनंद मानता है, वह रौद्रध्यान है. शब्द तो बहुत ... लेकिन कहां उसे (समझना है). ये कमाना, कमाना, कमाना... .. सामनेवालेने जो कहा, उसको जय नारायण! अस. जैसे अर्थ कर दे. चारह हजार ले जाओ, भाई! यहां कहते हैं, भगवान! वह तो राग आता है, मंद राग हो, लेकिन उसमें उत्साह र्तना अढा दे कि मानो मेरा कल्याण हो गया. समझमें आया? .. मट्ट की, जैसे शिक्षणमें दे दिया, जैसी पाठशाळा बनायी. कौन बनाये? वह तो परकी पर्याय है, क्या तेरेसे बनती है? तेरे भावमें रागकी मंदता लुयी, उसमें उत्साह...

मुमुक्षु :- ... हमारे जैसेसे तो बनता है न?

उत्तर :- धूलमें ली उसका पैसा है कहां कि बने? धर्मचंद्रज!

मुमुक्षु :- निमित्त-नैमित्तिक संबंध है.

उत्तर :- संबंध है. होता है उसके कारणसे. निमित्त कलनेमें आता है, निमित्तसे हुआ नहीं. ओलो तो मालूम पडे. निमित्त है तो बना है जैसा नहीं.

मुमुक्षु :- उसका निमित्त तो बनना न?

उत्तर :- लेकिन.. वही स्पष्टीकरण किया. वह बननेवाला है तो बना है. निमित्त है तो बना, तो निमित्त नहीं हुआ, कर्ता हो गया. सेठ! अभी पाठशाळा बनी अक लाभकी, पांच लाभकी. हमने बनायी. बिलकूल बूढ है. वह बननेवाली पर्याय जडकी होनेवाली थी. उस समयमें उससे लुई है, तेरे आत्मासे नहीं.

मुमुक्षु :- किसने बनायी?

उत्तर :- बनायी जडने.

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- निमित्त कलनेमें आया. निमित्त आया एसविये बना ऐसा नहीं.

मुमुक्षु :- अननेमें निमित्तका लिस्सा कितना टका?

उत्तर :- अक अंश टका नहीं. कलनेमें आता है. वल तो ... ऐसा निमित्तका ज्ञान कराया है. .. से बने और निमित्तसे बने तो वल कर्ता हो गया. वल स्वतंत्र अनंत परमाणुकी पर्याय परावर्तनमें जब (होनेवाली थी तब लुई है). ये क्या बना? देओ! कौन बनाता है यहां? रामजुभाई? कहां गये? अब तक तो रामजुभाई प्रमुज थे. अभी उसकी सही चलती है. बनाते हैं वल? बना सकते हैं? कहां गये शांतिभाई?

भाई! भगवान कलते हैं कि, तू तो ज्ञानस्वरूप है. ज्ञानस्वरूप परकी पर्यायमें कितना लिस्सा ढालता है? जडकी पर्यायमें तेरा लिस्सा कितना गया है वहां कि तेरेसे वल बना? वीतराग मार्ग त्रिलोकनाथ परमेश्वर,.. यहां कला न? ... 'दोष आनंदनं कृत'. पुण्य उत्साह दोष है. स्वभाव पवित्र है उसकी तो तेरी दृष्टि है नहीं. उसमें तो उत्साह करता नहीं और पुण्यभावमें तेरा उत्साह चला गया. 'दोष आनंदनं कृत' तुने दोषमें आनंद माना. मिथ्यादृष्टि है. समजमें आया? बात तो भाई, वस्तु है ऐसी, उसमें कोई गडबड चले? ... सम्यक् सत्ये ज्ञानमें अक क्षण भी नहीं चले. ज्ञान, सत्या ज्ञान... हो तो नहीं चले. है न?

ईस तरह संसारका कारण दोष है उसमें प्रसन्न होकर तन्मय... प्रसन्न होता है, प्रसन्न हो जेता है. भुश हो जये, भुश हो जये कि ओलो..! हमने तो क्या किया! कितनी पाठशाळा बनायी, कितने मकान बनाये, कितने ... बनाये, कितना इलाना बनाया. कौन बनाता है? धूलमें भी बना नहीं सकते. ... परद्रव्यमें धूस जता है?

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- हां, वल तो है नहीं. उससे परिणाम होता है, उसमें तुम क्या कर सकते हो? वीतरागकी वाणी ऐसा कलती है और वस्तुका स्वभाव ऐसा है. ...

परमाणु अनंत पदार्थ है. एह द्रव्यमें पदार्थ है कि नहीं? पुद्गल. तो पुद्गल अनंत है कि नहीं? तो अनंत पुद्गल द्रव्य अपना रजकर पर्याय उसमें होती है कि नहीं? तो परकार्यमें पर्याय उसके कारणसे हो और दूसरा कहे कि मेरे कारणसे लुई, (वल) मिथ्यादृष्टि मूढ वीतराग मार्ग लोप करके अपनेमें परका कार्य मैंने किया ऐसा उत्साह करता है. शुभभावमें उत्साह करते हैं, यहां तो ये लेना है. समजमें आया? ... उत्साह. ओलोलो..! चिह्नाने लगे, हां! तारणस्वामीने तो व्यवहारको ठीका दिया है. ... ऐसा कहे. ... फिर भी वल

मूल आचरण-सम्यक् आचरण नहीं है. जिससे मुक्ति है वह आचरण, वह विकल्प आया वह नहीं. विकल्प आया वह तो पुण्यबंधका कारण है. आता है बराबर है, लेकिन आया तो धर्म हो जायेगा, करते-करते अपनेमें कल्याण हो जायेगा, ऐसा तीन काव तीन लोकमें है नहीं. देजो! १६८. धर्मका स्वरूप.

शुद्ध धर्म च प्रोक्तं च, चेतना लक्षणो सदा।

शुद्ध द्रव्यार्थिकनयेन, धर्म कर्म विमुक्तयं।।१६८।।

देजो! प्र-उक्तं. भगवानने .. ऐसा कहा. अहो..! भगवान परमात्मा परमेश्वर वीतरागकी वाणीमें शुद्ध धर्म ऐसा कहा गया है. देजो! शुद्ध धर्म ऐसा कहा गया है कि सदा आत्माका चेतना लक्षण है. राग, पुण्य, व्यवहार, विकल्प-इकल्प उसका लक्षण है नहीं. समझमें आया? सदा चेतना लक्षण. 'चेतना लक्षणो सदा'. भगवान आत्मा ज्ञान-दर्शन उसका सदा लक्षण है. क्या देहकी क्रिया उसका लक्षण है? वह पूछा था न, (संवत्) १९९९की सालमें? चैतन्य लक्षण ... पदार्थ. कलौ, समझे? आत्माका लक्षण क्या? देहका ध्यान रचना वह. देहको संभालना वह आत्माका लक्षण. ... आत्माका गुण क्या? १९९९की बात है.

यहां कहते हैं, प्रभु! अकबार सुन तो सही. 'शुद्ध धर्म च प्रोक्तं' भगवान त्रिलोकनाथने तो वह कहा है, 'चेतना लक्षणो सदा'. ... तेरा स्वभावमें लक्ष्य और ध्येय ज्ञाना वह चेतना लक्षणसे लक्ष्य होनेवाला है. समझमें आया? आत्माका लक्ष्य प्रतीत अनुभव, कोई विकल्प दया, दान, व्रत, व्यवहार रत्नत्रयके विकल्पसे आत्माका ध्येय पकड़नेमें आता नहीं. क्योंकि उसका वह लक्षण नहीं. समझमें आया? सदा चेतना लक्षण भगवान आत्माका लक्षण कहा है. समझमें आया? ये चेतना ज्ञानना-देहना, ज्ञानना-देहना, ज्ञानना-देहना, ज्ञानना-देहना... भगवान त्रिकाव स्वरूप त्रिकावी आत्मा लक्ष्य (और) चेतना लक्षण. लक्षणसे लक्ष्य होता है. समझमें आया? पुण्य-पाप, दया, दान, व्यवहार, जिस भावसे तीर्थंकर गोत्र बंधे वह राग है. वह राग चेतनका लक्षण नहीं है. समझमें आया? उसका लक्षण ज्ञानना-देहना, वह शुद्ध चैतन्यका लक्षण है. लक्षणसे लक्ष्य पकड़नेमें आता है. ऐसा भगवानकी वाणीमें आया है. समझमें आया? भावना है न. (ईसलिये) बारंबर वही शब्दोंको दूसरी शैलीसे (कहते हैं). कितनोंको ऐसा लगता है कि वही बात बार-बार करते हैं. ... भावनाके ग्रंथमें ऐसी बात ... समझमें आया?

'शुद्ध द्रव्यार्थिकनयेन'. देजो! शुद्ध द्रव्यकी दृष्टिसे. द्रव्यार्थिक शब्द है न? द्रव्य नाम त्रिकावी शुद्ध वस्तु, अर्थिक नाम प्रयोजन. नय नाम ज्ञानका. जिसका ज्ञानका प्रयोजन शुद्ध द्रव्य है उसको द्रव्यार्थिकनय कहते हैं. इससे, 'शुद्ध द्रव्यार्थिकनयेन'. नय ज्ञानकी पर्याय है, चेतना लक्षणवाली. समझमें आया? नयेन. शुद्ध द्रव्यार्थिक. शुद्ध त्रिकावी द्रव्य नाम आत्मा, उसका जिस नयका प्रयोजन है, अर्थ नाम प्रयोजन है, वह ज्ञान अपने शुद्ध

द्रव्यको लक्ष्य करके, अपना प्रयोजन सिद्ध करती है, उस नयको शुद्ध द्रव्यार्थिक कहनेमें आता है. समझमें आया?

‘शुद्ध द्रव्यार्थिकनयेन’ शुद्ध द्रव्यकी दृष्टिसे त्रिकाव ज्ञायक चिदानंद सत् स्वरूप परमानंद अेकरूप. अनंत गुण भवे लो, लेकिन उसका रूप अेक अभेद है. उसकी दृष्टि. द्रव्यार्थिकनय है वल नय ज्ञान है. और प्रतीत दुर्घ वल दृष्टि है. शुद्ध द्रव्यकी दृष्टिसे.. समझमें आया? वल धर्म, अपना शुद्ध स्वभाव त्रिकाव, उसको जिस नयने दृष्टिने लक्ष्यमें लिया, जो पर्याय निर्मल प्रगट दुर्घ, वल धर्म सर्व प्रकारके कर्मसे रहित है. ऐसी मोक्षमार्गकी श्रावककी पर्याय (है). ये श्रावकाचार चलता है. भगवानका नाम स्मरण करना, वाणी याद करना, वाणी सुनना सब विकल्प है. देओ, क्या कहते हैं?

‘शुद्ध द्रव्यार्थिकनयेन, धर्म कर्म विमुक्तयं’. शुभाशुभ विकल्प ऐसा जो भावकर्म, उससे वल द्रव्य विमुक्त है. समझमें आया? .. धर्मकी तो बात है नहीं, वल तो दूर रह गया. आत्मा, द्रव्यकर्म जड उससे भिन्न (है). समझे? नोकर्म शरीर, वाणीसे भिन्न और भावकर्म-पुण्य-पापका भाव. ‘धर्म कर्म विमुक्तयं’. धर्म सर्व प्रकारकी.. विमुक्त शब्द पडा है न? ‘विमुक्तयं’ मात्र मुक्त शब्द नहीं है. बादमें कर्म निकाला. ‘धर्म कर्म विमुक्तयं’ भगवान आत्मा अनंत गुण राशि, उसे द्रव्यार्थिकनयसे लक्ष्यमें लेकर जो पर्यायमें निर्मल अवस्था, सम्यग्दर्शन-ज्ञान अरागी परिणति दुर्घ, उसको भगवान धर्म कहते हैं. वल धर्म मुक्तिका उपाय है. दूसरा कोर्ध मुक्तिका उपाय है नहीं. समझमें आया? ये ‘धर्म कर्म विमुक्तयं’. सब कर्म-कार्यसे विमुक्त है. ओहोहो..! समयसारमें छठी गाथामें आता है. ... कहो, समझमें आया? उसको धर्म कहते हैं. वीतरागकी वाणीमें उसको धर्म कहा है. उससे विपरीत कहे वल वीतरागकी वाणी और वीतरागको ज्ञानते नहीं. वीतराग मार्गका लोप करनेवाला कहते हैं. समझमें आया? १६८ (दुर्घ). १६९.

धर्म च आत्म धर्म, रत्नत्रय मयं सदा।

चेतना लक्षणो यस्य, तस धर्म कर्म विवर्जितं।।१६९।।

ईसमें विशेष स्पष्ट किया है, हां! रत्नत्रय कौन, कैसा रत्नत्रय. लोग कहते हैं, रत्नत्रय व्यवहार, व्यवहार, व्यवहार. पंडित लोग बहुत कहते हैं. पंडित जितने परिचयमें आये वल बहुत कहते हैं. ...

‘धर्म च आत्म धर्म’ आत्मधर्मको भगवान वीतरागदेव धर्म कहते हैं. पुण्य-पापका विकल्प, व्रतादिका विकल्प आत्मधर्म नहीं, वल तो राग है. समझमें आया? अथवा धर्म आत्माका स्वभाव है. आत्मा ज्ञानानंद शुद्ध स्वरूप, उसकी पर्याय प्रगट होना, वल स्वभाव आत्माका धर्म है. वल तीनों कालोंमें.. देओ! सदा कहते हैं न? सदा नाम तीनों कालोंमें. कोर्धमें ऐसा है कि पहले व्यवहार रत्नत्रय धर्म है और बादमें निश्चय रत्नत्रयमें श्रावकको

पुण्यका धर्म है. शास्त्रमें आता है न? व्यवहार चले वहां आता है. श्रावकको पूजा और.. क्या करते हैं? दान. दान, पूजा नित्य धर्मो. रणसारमें आता है. वह तो व्यवहार पुण्यकी बात की है. ऐसा .. आता है, पापसे बचनेको. ये धर्म तो 'रत्नत्रय मयं सदा'. तीनों कालमें श्रावकाचारमें, भूतकाल, वर्तमान और भविष्यमें..

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- इसमें तो सब आया. भरतमें, औरावतमें या महाविदेहमें कहीं भी सख्या श्रावक हो, वह 'रत्नत्रय मयं सदा'. ये श्रावकाचार है. श्रावकमें तीन रत्नत्रय होते हैं. पंचम गुणस्थानमें भी शुद्ध स्वर्ूपकी प्रतीत, अनुभव, उसका ज्ञान और लीनता-ये तीनों रत्न श्रावकको भी है, ऐसा कहा. देओ! मुनिको ही तीन रत्न होते हैं और श्रावकको नहीं, ऐसा नहीं.

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- गप मारते हैं. ये तो उसको कठिन लगे. बूढा है, ऐसा ही करते हैं. जिसने सुना हो, उसे मालूम भी नहीं होता.

'रत्नत्रय मयं' अभेद कहा न? भाई! देओ! 'रत्नत्रय मयं' भगवान् आत्मा जैसे अनंत गुणका अेकस्व शुद्ध है, उसकी दृष्टि, ज्ञान, लीनतामय आत्मा हो गया. आत्मा हो गया, ऐसा करते हैं. तीनों पर्यायमें आत्मा अभेद हो गया. रत्नत्रयमय है, आत्मधर्म. उसका नाम आत्मधर्म, उसका नाम श्रावकधर्म, उसका नाम रत्नत्रय धर्म, उसका नाम मोक्षमार्ग. धरके पुस्तकके अर्थकी भबर नहीं. पैसेकी सब भबर है. इतना पैसा है, इतना ब्याज आता है, इतना ... समजमें आया?

'चेतना लक्षणो यस्य' क्या करते हैं? जिसका लक्षण चेतना है, ये स्व अनुभव है. चेतना है न, चेतना-अनुभव. कितने शब्द लिये हैं, देओ! अेक तो धर्म तो आत्माका स्वभाव, तीनों कालमें रत्नत्रयमय है. निश्चय रत्नत्रय, हां! ... शुद्ध चैतन्यमूर्ति प्रभु, उसकी दृष्टि, ज्ञान और लीनताका जितना अंश प्रगट हुआ, वही रत्नत्रय धर्म, वही आत्मधर्म. वही तीनों कालमें रहनेवाला धर्म. और 'चेतना लक्षणो यस्य'. उसका अनुभव वह धर्म. रत्नत्रयका अनुभव स्वभावका करना वह धर्म. कैसा है? सर्व कर्मकी उपाधिसे रहित है. 'कर्म विवर्जितं' .. लिया है. विमुक्तं. विमुक्त कहे या विवर्जितं, विवर्जितं. जिसमें जडक्रिया नहीं. नोकर्म. जड कर्मकी क्रिया-पर्याय नहीं और पुण्यादि विकल्प भावकर्मकी क्रिया नहीं. ऐसा 'कर्म विवर्जितं' अपनी पर्यायमें आत्म स्वभाव सर्वज्ञने कहा ऐसा आत्मा, हां! अज्ञानी कहे वह आत्मा नहीं. जैसे आत्माकी दृष्टि, ज्ञान और लीनता वह सर्व 'कर्म विवर्जितं' है. उसमें रागादिके परिणामसे रहितको.. देओ! 'तस धर्म कर्म विवर्जितं' वह धर्म कर्मकी उपाधिसे रहित है. यहां भी ... कहा. समजे? धर्म कहीं बाहरमें नहीं है. बाहरका अर्थ

શરીર, વાણીકી ક્રિયામેં તો નહીં હૈ, લેકિન પુણ્યકે પરિણામમેં ધર્મ નહીં હૈ. વહ બાહ્ય (હૈ).
૧૬૯ હુઈ. શુભ વિકલ્પ ઉત્પન્ન હોતા હૈ વહ ભી બાહર હૈ, અંતર સ્વરૂપમેં નહીં હૈ. પુણ્ય
પરિણામમેં ધર્મ નહીં. બાહરમેં નહીં, અંતરમેં હૈ. ઉસે શ્રાવકાચાર કલનેમેં આતા હૈ.

(શ્રોતા :- પ્રમાણ વચન ગુરુદેવ!)

